कैसे कैसे सफ़ीने

अनिलकुमार अंदाज़

कैसे करें यक़ीन

(ग़ज़ल संग्रह)

अनिल कुमार 'अंदाज़'

हिन्दी साहित्यकार परिषद्
1, पोनप्पा रोड, द्रौपदी घाट, इलाहाबाद-14

कृति स्वाम्य : कवि की ओर से प्रकाशन द्वारा सुरक्षित
प्रथम संस्करण : 1997
मूल्य : अस्सी रुपये (सजिल्द)
पचास रुपये (अजिल्द)
आवरण : रतीनाथ योगेश्वर
प्रकाशन : हिन्दी साहित्यकार परिषद्
1, पोनप्पा रोड, द्रौपदी घाट, इलाहाबाद–14
मुद्रक : रामायण प्रेस, 739, पुराना कटरा, इलाहाबाद

KAISE KAREN YAQEEN (GAZALEN)

by Anil Kumar 'Anda

मेरा यह पहला ग़ज़ल संग्रह
'कैसे करें यक़ीन'
सुप्रसिद्ध ग़ज़लकार जनाब एहतराम इस्लाम
को सादर समर्पित है,
जिन्होंने मुझे शायरी का
अलिफ़, बे पढ़ना-लिखना
सिखाया.........।

अनिल कुमार 'अंदाज़'

बात बटलोई की : बहाने कुछ चावलों के :–

सौंदर्य और प्रतिभा किसी की बपौती नहीं है, इन पर किसी एक जात-बिरादरी, कुल-गोत्र रंग-रूप और वर्ण का न कभी कापीराइट रहा, न अभी है और न कभी होगा...। ये सारी बातें ज्यो की त्यों, हूबहू और अक्षरशः लागू होती है श्री अनिल कुमार 'अंदाज़' के गजल संग्रह–"कैसे करें यक़ीन" पर ! हो सकता है यह 'अनिल कुमार 'अंदाज़' नाम बहुतों के लिए बिल्कुल नया हो। क्योंकि अनिल कुमार 'अंदाज' न कभी पत्र-पत्रिकाओं में छपास के लिए परेशान दिखाई दिए न कभी गोष्ठियों मुशायरों में तथाकथित 'पढ़ास' के लिए परेशान दिखाई दिए। हाँ, अगर कभी तथाकथित उस्तादों और अखाड़ो के बीच उठे बैठे भी तो बस शौकिया हो, लेकिन इतना जरूर है कि अपना खास काम अपने खास अंदाज मे करते रहे और बराबर करते रहे। छेनी-हथौड़ी और डायनामाइट से तोडा जाने वाला पहाड़ साफ-साफ दिखाई भी देता है और उसके टूटने की आवाज मीलों - वर्गमीलों में सुनाई भी देती है लेकिन उसी पहाड़ को भीतर ही भीतर जब पानी की कोई पतली धार, सितार के तार और कच्चे सूत से भी पतली धार तोड़ती है तो बरसों क्या सदियों तक उस पतली धार का भीतरी संघर्ष न कही दिखाई देता है न कही सुनाई देता है लेकिन एक दिन ऐसा आता है जब वही पतली धार झरना होकर पहाड़ों पर रेंगना शुरू करती है और धीरे धीरे नदी बन जाती है, अनिल कुमार अंदाज के ऐसे ही मौन संघर्ष का पर्याय है, "कैसे करें यकीन"।

"कैसे करें यक़ीन" की रचना धर्मिता, कबिता और रचनाकार की मूल संवेदना है, यही उसकी थाती है। धारदार और पानी दार आदमी हर हाल में अपनी थाती के प्रति भी ईमानदार बना रहता है। अपना सब कुछ दाँव पर लगाकर भी अपनी साख बचाकर रखता है, कभी अपनी साख को गिरने नहीं देता, जाहिर है ऐसे दिल-दिमाग वाले के पास कुछ परम्परायें होंगी, कुछ ऊसूल होगे, कुछ मूल्य होंगे कुछ आदर्श और प्रतिमान होगे, जिनकी पहचान बनाये रखने में वह कभी भूख-प्यास से टूटा हारा होगा, कभी पसीने से लथपथ हुआ होगा लेकिन न तो चुनौतियों से घबराया होगा न कसौटियों पर खरा उतरने से डरा होगा, भगा होगा, और इन सबके बीच आदमी की तरह जीना उसे मुश्किल और नामुमकिन भी लगा होगा...मुझे यक़ीन है कि ऐसी तमाम स्थितियों परिस्थितियों से घिरे होंगे अनिल कुमार 'अंदाज' और उनके बीच से गुजरे भी होगे तभी तो इतना आगे निकल आये हैं। घर-दफ्तर यार-दोस्तों टोलों-मुहल्लों के पारस्परिक और सामूहिक षडयंत्रों से बने चक्रव्यूह को तोड़ते हुए—रुकावटों बाधाओं को नकारते हुए। अंदाज के इस तथाकथित पहले

प्रयास और प्रयोग में समीक्षा की गुंजाइश को महत्व देना उतना आवश्यक नही है जितना अनिवार्य है और आवश्यक है इसमें समाहित उपलब्धियों और संभावनाओं का साक्षात्कार करना-कराना और यह तभी संभव है जब पाठक इसके हर शेर से साक्षात्कार करेगा, "ज्यों ज्यों निहारिये नेरि ह्वै नैननि त्यो त्यों खरी निकरै सुनिकाई" वाला हाल है, नमूने के दो चार चावल समूची बटलोई के भाव से जोड़ने की सहज सामर्थ्य रखते है वे हाजिर है--

इक जख्म था जो दिल पे उभरता चला गया,
और रफ्ता रफ्ता अक्स बिखरता चला गया।
माना कि दिल के जख्म मिले आप से मगर
मैं आप के करम से सँवारता चला गया।

× × ×

बरसो हुए न उससे मुलाकात हो सकी
दिल फिर भी कह रहा है वो पहचान जायेगा।

× × ×

किसको फुर्सत थी सुने अफसाये दर्दो अलम;
इसलिए अंदाज दीवरों से टकराते रहे।

× × ×

क्या किसी को उठायेगा वो शख्स;
लुत्फ लेता है जो गिराने मे।

× × ×

हौसला हो तो छीन लो बढ़कर
हक के तालिब हो गर जमाने में।

× × ×

हसने नही देती तुम्हें जिस शख्स की यादे
उस शख्स की यादों को भुला क्यों नहीं देते।

× × ×

जरूर दिल में है किसी के कोई फास गड़ी।
किसी के चेहरे पे हमने तनाव देखा है।

ऐसी कुछ पंक्तियाँ सचमुच संवेदनशील मन को बहुत दूर तक अपने साथ ले जाती है। और इनके साथ यात्रा करने वाला बहुत शीघ्र ही इन पंक्तियो का तरफदार बन जाता है। इस संदर्भ में यहाँ एक बात और कहना चाह रहा हूँ आजकल 'ग़ज़ल' को भी हिन्दी उर्दू के बटखरों से तौला जोखा जा रहा है मैं यह आज तक नहीं समझ पाया कि ऐसा बँटवारा कौन कर रहा है और क्यों कर रहा है क्या अलग-अलग लिपि में लिखे जाने के कारण या रचनाकार के हिन्दू-मुसलमान होने, कारण या व्याकरण के कारण। इन तमाम दायरों को

अंदाज की रचना धर्मिता तोडती है, और अपने मूलभाव से जोड़ती है। इस
लिपि देवनागरी है, इसका व्याकरण क्रियापद भी अपने पारंरिक और आ
परिवेश से जुड़े है ऐसे में इसे केवल मुकम्मल गजल पुकारना ही अपने प्र
भी न्याय होगा, रचनाकार के प्रति भी न्याय होगा और 'कैसे करें यकी
संकलन के प्रति भी न्याय होगा।

ये गजले किसी फैशन या शौक में आकर नही कही गयी है बल्कि
सवेदनशील आदमी ने जो कुछ जिया है, जिसे उसने बराबर अपने आस पास घ
होते हुए देखा है उसी को उसने सलीके से एक विस्तृत आयाम दिया है रंग दि
है, रूप दिया है नाम दिया है।

इसलिए मेरा एक विनम्र आग्रह है कि आप सब इसे पढ़े और या
अनिल कुमार अंदाज की जगह अपने को रखने का सार्थक प्रयास करें
अपने भीतर अनिल कुमार 'अंदाज़' को जगह देने की उदारता वरतें तभी बात बने
भी—दो में से कोई एक निर्णय तो लेना ही लेना होगा। बिना इसके 'अंदाज' अ
अंदाज की शायरी तक पहुँचा नहीं जा सकता—बहरहाल इतना और कि—

क्या बतायें उसे कि हम क्या है,
एक दिन खुद ही जान जायेगा।

135 प्रीतम नगर, इलाहाबाद

कैलाश गौतम

कवि की ओर से

मेरी शायरी का मरकज है कुदरत के मनाजिर, दुनिया भर के इन्सानी हुकूक और इनके बीच बाहम जोरो-जुल्म छल-कपट, फरेब को 'उजागर करने की कोशिश दर कोशिश। इन कोशिश मे समकालीन यथार्थ की भयावहता और पश्चिमीकरण की ओर बढ रही अंधी सदी के भविष्य को अपनी शायरी के माध्यम से कितना रेखांकित कर सका हूँ यह तो नही जानता किंतु कविता और साहित्य की मृत्यु की घोषणाओं के इस दौर में जीवन की मामूली रेखाओ को भी अपने रचनाकर्म से उकेर सकने मे यदि कामयाबी मिल सकी तो इसे अपने लिए बड़ी उपलब्धि समझूँगा।

समकालीन सच की पहचान और उसके घिनौने एवम् नकारात्मक पक्ष के चेहरे से नकाब उठाकर असली चेहरे को सामने लाना मेरा मकसद रहा है ताकि दुनियाँ का आखिरी आदमी अपने हक और उन तमाम सफेद पोश लोगों की नाहक कारगुजरियों की शिनाख्त कर सके और जरूरत पडने पर लामबन्द हो सकें, कस सके अपनी मुट्ठियों को।

मैं कोई पैदायसी या खानदानी फनकार या शायर नही हूं और जहाँ तक मैं जानता हूँ मेरे खानदान में अब तक कोई कवि या शायर नहीं हुआ और शायद हो भी नहीं सकता था कम से कम शायर तो बिल्कुल ही नहीं, किन्तु मैने शायरी को चुना। जाहिर है जब मैंने पहला शेर कहा उस वक्त मुझे यह तमीज न थी कि बहर या काफिया रदीफ भी कोई चीज होती है खैर धीरे-धीरे उठते-बैठते सब कुछ सीखता रहा और कहता भी रहा। लोगों ने मेरा हौसला बढ़ाया और फिर मैंने पलटकर पीछे नही देखा। यह सच है कि दलित चेतना की ज्वालामुखी निरन्तर मेरे भीतर ही भीतर वर्षों धधकती रही। जिसका मेरी शायरी मे मेरा विस्फोट भी है लावे सा बहाव और रचाव भी। इन सबके मूल मे मेरे कुल-कुनबे की पीड़ा और तड़प है साथ में है हजारों साल से भोगा गया यथार्थ और लोक चेतना की ध्वनि-प्रतिध्वनि।

मैं अपने उन तमाम दोस्तों का शुक्रगुजार हूं जिन्होंने मेरा हौसला बढाया और लिखते रहने को कहा। मै उन बुजुर्गों का आभारी हूँ जिन्होंने मेरी पीठ थपथपायी विशेष रूप से आदरणीय लक्ष्मी कांत वर्मा एवं दूधनाथ सिंह जी के प्रति कृतज्ञ हूँ जिन्होंने अपने साथ बैठने-उठने का मौका दिया जिनके जीवन दर्शन से बहुत कुछ रास्ते की धुंध हटी।

मैं सुरेश कुमार शेष, हरीशचंद पाण्डे, यश मालवीय, नइयर आकिल ड
अबरार, आदि का विशेष आभारी हूँ जिन्होंने कभी भी आँख मूंद कर मेरी प्रशं
नहीं किया और समय-समय पर मेरी शायरी पर उगली उठाई ।

मैं भाई शिवनाथ, हरीश वर्धन, अनिल कुमार 'याकूत' सदानन्द चटज
बादल दादा आदि के प्रति भी अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने मेरी हौस
आफजाई की ।

मैं अपनी पत्नी बच्चों तथा परिवारजनों के प्रति आभार न प्रकट क
तो बेइमानी ही होगी आखिर उनके हिस्से का समय ही मैंने शायरी को दि
है और दे रहा हूँ ।

अन्त में मैं हिन्दी साहित्यकार परिषद् (हिसाप) के प्रमुख भाई श्रीरंग त
अन्य सम्मानित सदस्यों के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने मे
रचनाओं को इतने कम समय मे संग्रहीत कर प्रकाशित करने का कार्य कर दिखा
और मेरा यह पहला ग़ज़ल संग्रह 'कैसे करें यक़ीन' आप तक पहुँच सका ।

432/अ सुलेम सराय
इलाहाबाद

अनिल कुमार 'अंदा

रचना-क्रम

क्रम सं०   पृष्ठ

क्रम सं० | पृष्ठ सं०

एक

सारा कुसूर तेरा मेरे नाम हो गया।
मैं बे-ख़ता ही मूरिदे-इल्ज़ाम[1] हो गया।

तन्हाइयों में काट दी मैंने तमाम उम्र,
चाहत में तेरी किसलिए बदनाम हो गया।

तेरे बदन का ज़ख़्म, मेरे दिल का ज़ख़्म है,
तुझको जो ग़म मिला' वो मेरे नाम हो गया।

जिस हुस्न पर कभी था हमारा ही अख़्तियार[2]
कैसे वो ग़ैर का दिले—नाक़ाम हो गया।

"अँदाज़" देख पहली मुलाक़ात का तिलिस्म,[3]
मैं उसके नाम औ वो मेरे नाम हो गया।

---

1. अभियुक्त (जिस पर इल्जाम थोपा जाय)
2. अधिकार
3. जादू

दो

इक ज़ख्म था जो दिल पे उभरता चला गया,
औ रफ़्ता-रफ़्ता अक्स निखरता चला गया।

की आपकी निगाहों ने यों संग-सारियाँ,[1]
शीशा हमारे दिल का बिखरता चला गया।

इक तेरी आस थी जो वफ़ा की गली से मैं,
हर ख़तरा मोल लेके गुज़रता चला गया।

मैं था कि लब, हटाये न, जामे-शराब से,
कोई मेरे अयाग[2] को भरता चला गया।

माना कि दिल को ज़ख्म मिले आपसे मगर,
मैं आपके करम से संवरता चला गया।

पूरी न हो सकेगी कभी दास्ताने-इश्क़,[3]
'अंदाज़' मौत से जो सिहरता चला गया।

---

1. पत्थर बरसाने की क्रिया
2. प्याला
3. प्रेम-कथा

तीन

जो कुछ है मेरे दिल में वो सब जान जाएगा।
उसको जो मैं मनाऊँ तो वो मान जाएगा।

बरसों हुए न उससे मुलाक़ात हो सकी,
दिल फिर भी कह रहा है, वो पहचान जाएगा।

दामन तेरे करम[1] का न मुझको अगर मिला,
तू ही बता कहाँ मेरा अरमान जाएगा।

वह माहरू[2] जो बाम पे, आया तो क्या ख़बर,
कितने ख़ुदा-परस्तों[3] का ईमान जाएगा।

'अंदाज़' बढ़ती जाएगी दीवानगी यूँ ही,
मेरी तरफ़ अगर न तेरा ध्यान जाएगा।

---

1. कृपा
2. चन्द्रमुखी (चाँद केसमान मुख हो)
3. ईश्वर-भक्त

चार

निगाह मुझपे लुटाओ तो बात बन जाए।
मुझे तुम अपना बनाओ तो बात बन जाए।

खुशी का साथ निभाना तो कुछ नहीं मुश्किल,
हुजूमे-ग़म[1] से निभाओ तो बात बन जाए।

निगाह चाहिए रखनी सदा ही सीरत[2] पर,
जो सूरतों पे न जाओ तो बात बन जाए।

अकेले चलने का मतलब भटकते, रहना है,
कदम से क़दम मिलाओ तो बात बन जाए।

रहे-हयात[3] में, 'अदाज' गो अंधेरा है,
चराग़ दिल का जलाओ तो बात बन जाए।

---

1. दुखों की भीड़
2. गुण
3. जीवन की राह

पांच

अगर तेरे होंठों पे इक़रार होता।
तो मैं किसलिए ख़ुद से वेज़ार[1] होता।

तग़ाफ़ुल[2] का पहले ही इज़हार[3] होता,
तो ख़्वाबों का ऐवां[4] न मिसमार[5] होता।

कोई खुद को बरबाद करता न हरगिज़,
अगर तेरी चाहत का इजहार होता।

अगर तेरी आँखों की सहबा[6] छलकती,
किसे मयपरस्ती से इंकार होता।

न 'अंदाज़' गर ज़िक्र उनका समोते,
कहाँ फिर भला हुस्ने-अश्आर[7] होता।

---

1. खाली (रिक्त)
2. उपेक्षा
3. प्रकटन
4. महल
5. ढूहना
6. शराब
7. शेरों का सौन्दर्य

छः

लहू से तर-ब-तर मज़र हमारे नाम हो जाए।
तुम्हारे हाथ का ख़ंजर, हमारे नाम हो जाए।

मिले फ़िरदौस दुनिया-ए-मसर्रत[1] की, तुझे हर जा,[2]
जहाने गम[3] का हर महशर[4] हमारे नाम हो जाए।

तमन्ना है कोई तूफ़ाँ न आये तेरी दुनिया में,
बलाओं का हरेक लश्कर-हमारे नाम हो जाए।

जहाँ भी जाय तू ख़ुशियाँ भी तेरे साथ ही जाएं,
रहे तू शाद[5], ग़म का घर हमारे नाम हो जाए।

दुआ 'अंदाज' की सुन ले, बहार उनको अता[6] कर दे,
वला से ऐ खुदा! पतझर हमारे नाम हो जाए।

---

1. खुशियों के संसार का स्वर्ग
2. हर जगह
3. दुखों का संसार
4. प्रलय क्षेत्र (कयामत)
5. खुश
6. प्रदान

सात

किस्मत को हो नसीब संवरना तुम्हारे हाथ ।
मैं चाहता हूँ जाँ से गुज़रना तुम्हारे हाथ ।

जुल्फ़ों से यों टपकती है पानी की बूँद-बूँद,
गोया[1] कि मोतियों का है झरना तुम्हारे हाथ ।

मस्ती में डूब डूब गया बे-पिए ही वो,
जिसने भी देखा जाम का भरना तुम्हारे हाथ ।

हूँ क्या तुम्ही बताओ तुम्हारे बग़ैर मैं,
है मेर दिल का चलना-ठहरना, तुम्हारे हाथ ।

सौ बार डूब सकता हूँ गर तुम यकीं दिलाओं,
डूबा तो होगा मेरा उभरना तुम्हारे हाथ ।

क्या ग़म जो तुमने ज़िन्दगी मेरी बिखेर दी,
मैं खुद ही चाहता था बिखरना तुम्हारे हाथ ।

समझूँ कि अहले-दिल[3] की दुआ कर गई असर,
'अंदाज' जो नसीब हो मरना तुम्हारे हाथ ।

---

1. जैसे
2. विश्वास
3. दिलवाले

आठ

ख़ुश नज़र आता है लेकिन रो रहा है आदमी।
होंठ पर झूठा तबस्सुम ढो रहा है आदमी।

इस क़दर बे-ज़ार[2] है इक-दूसरे से आज कल,
साफ़ दिखता है तकल्लुफ़ ढो रहा है आदमी।

इश्क़ के दर से कमाई थी जो दौलत सब्र की,
क्यों हवस की राह चलकर खो रहा है आदमी।

इसको हैबत-नाक[3] कहिए या कि हैरत[4] का मुकाम,
हर तरफ़ इक आग है और सो रहा है आदमी।

जानता है ज़हर का इक बीज ही है भेद-भाव,
जहर का ये बीज लेकिन बो रहा है आदमी।

जान दे देता था जिसके वास्ते, उस फ़र्ज़ से,
किसलिये 'अदाज' ग़ाफ़िल हो रहा है आदमी।

---

1. मृदुहास
2. खाली-खाली
3. खौफ
4 आश्चर्य
5. बे-ख़बर

नौ

हुजूमे-ग़म[1] में घिरी ज़िन्दगी उदास तो है।
ख़ुदा का शुक्र है, फिर भी ख़ुशी की आस तो है।

घनी कुछ और हुई, तीरगी-ए-हिज्र[2] तो क्या,
कि तेरी याद का, रौशन चराग़ पास तो है।

हज़ार हमको मयस्सर नही फ़िज़ाए-बहार[3]
हसीन ख़्वाबों की, जन्नत[4] हमारे पास तो है।

सजाये रखता हूँ तन्हाइयों की बज़्म[5] सदा,
कि इसमें तेरे महकते बदन की, बास[6] तो है।

मैं अपने दिल को समझता हूँ एक आईना,
कि इसमें तेरी मुहब्बत का इन्अकास[7] तो है।

सजाये रखते है चेहरे पे हसीन[8] 'अंदाज़'
हमारे दिल में वगरना[9], हुजूमे-यास[10] तो है।

---

1. दुखों की भीड़ (समूह)
2. जुदाई (बिछोह) का अँधेरा
3. ऋतु का वातावरण
4. स्वर्ग
5. महफिल
6. खुश्बू
7. प्रतिबिम्ब
8. खूबसूरत
9. वरना
10. निराशा की भीड़

दस

सामना होते ही क़तरा कर निकल जाते रहे।
आप आख़िर किस लिए मुझ पर सितम ढाते रहे।

ज़िन्दगी भर, जिन्दगी इक ख्वाब दिखलाती रही,
ज़िन्दगी भर हम, फरेबे-जिन्दगी[1] खाते रहे।

उम्र भर यादों ने रक्खा दिल के ज़ख्मों को हरा,
दिल लगाने का सिला हम उम्र भर पाते रहे।

हमने यों आबाद रक्खी, महफ़िले-शेरो-सुख़न,[2]
साज़े-ग़म[3] पर भी तराना हिज्र का गाते रहे।

कब बदलता था, किसी भी शय से, लेकिन दिल को हम,
आपके बख्शे हुए जख्मों से बहलाते रहे।

किस को फ़ुरसत थी, सुने अफ़साना-ए-दर्दो-अलम[4]
इसलिए 'अंदाज' दीवारों से टकराते रहे।

---

1. जीवन का धोखा
2. शेर और कविता की सभा
3. दु:ख का वाद्य
4. दर्द और दु:ख की कथा

ग्यारह

मुक़ाबिल[1] आइना यादों का रखकर मुस्कराते हैं।
हम अपनी बज़्मे-तन्हाई[2] को यों जन्नत बनाते हैं।

उधर वो ढूँडते हैं रास्ता हमको मिटाने का,
इधर हम इश्क़ में उनके, लहू दिल का जलाते हैं।

दिले-नादाँ[3] संभल कर चल कहीं धोखा न हो जाये,
गुलों के भेष में काँटे भी अक्सर दिल लुभाते हैं।

समझते हैं अगर खुद को मेरा महबूब वो सचमुच,
तो मेरा सामना होते ही क्यों इतना लजाते हैं।

वफ़ा वाले सितम पाकर भी एहसाँ याद रखते है,
वफ़ा जिनमें नहीं होती वो एहसाँ भूल जाते है।

हमारे सामने 'अंदाज़' वो आते नही लेकिन,
सुना है शेर अक्सर ही हमारे गुनगुनाते हैं।

---

1. सामने
2. अकेलेपन की सभा
3. ना-समझ दिल

बारह

महबूबे-दिल-आरा के तरन्नुम में बसी है।
अंदाज गजल आपने क्या खूब कही है।

कुछ मोल नहीं रखती ग़रीबों की तमन्ना,
दौलत के इशारे पे हमेशा ही लुटी है।

हालात अजब मोड़ पे आ पहुँचे हैं यारो!
है क़त्ल कहीं और कहीं राहज़नी है।

ऐ दोस्त ! भुला पाना तुझे कैसे हो मुमकिन,
हर सिम्त तेरी यादों की बारात सजी है।

जायें तो कहाँ जाँय करें रुख़ तो किधर का,
हर सिम्त[1] लुटेरों की यहाँ घात लगी है।

गिरियाँ[2] है कोई और कोई मह्वे-तबस्सुम,[3]
है अश्क कहीं और कहीं धूम मची है।

हिम्मत से सदा काम ले 'अंदाज़' वगरना,[4]
कमज़ोर की फ़रियाद यहाँ किसने सुनी है।

---

1. ओर, दिशा
2. रोता हुआ
3. मुस्कुराहट में लीन
4. वरना

तेरह

ये देखकर कि सितमगर,[1] करम पे मायल[2] है।
दरे-जमाल[3] पे ये दिल, वफ़ा का सायल[4] है।

कशिश नहीं मेरे लफ़्जो बयाँ में कुछ भी अगर,
जमाना किसलिए, मेरी ज़ुबाँ का क़ायल[5] है।

हमारी राह में रोड़े नहीं है, अब लेकिन,
हमारे बीच कोई, एहत्यात[6] हायल[7] है।

ये चम्पई[8] सा बदन है कि चाँद का पैकर,[9]
है कोई साज़ कि पैरों की तेरी पायल है।

जरूर मेरी तबाही का तज़्किरा[10] होगा,
तेरे करम से जो 'अंदाज़' आज घायल है।

---

1. अत्याचार करने वाला
2. झुकाव
3. सौन्दर्य का दर (देहलीज)
4. याचक (मांगने वाला)
5. मानना
6. सावधानी
7. रुकावट पैदा करना
8. गोरा
9. चाँद का आकार
10. जिक्र

चौदह

कब तक रहेगा दिल का चमन यों ही सोगवार[1]।
ऐ काश ! मेरी बाँहों में आजा तू एक बार।

पथरा न जाय आँख कहीं दिल न डूब जाय,
मुद्दत से तक रहा हूँ, तेरी राहे-इन्तज़ार।

कहते हैं किसको अश्क जिन्हें ये पता न था,
तेरे बिछुड़ने पर वही आँखें हैं अश्कबार[2]।

कोशिश के बावजूद, तुझे कैसे भूल जायँ,
है दिल के पास. जब तेरी ज़ख्मों की यादगार।

जुर्रत नहीं थी मुझमें तो, मिलता था खुल के वो,
'अंदाज़, मैं खुला तो हिजाबात[3] में है यार।

1. दु:खी
2. आँसू गिराना
3. शर्म (लज्जा) का बहुवचन

पन्द्रह

नित नए अंदाज़ से बरबाद होता ही रहा।
तुझको पाने के लिए मैं खुद को खोता ही रहा।

तेरे वादों ने कहीं का भी न रक्खा गो उसे,
दिल मेरा फिर भी तेरे वादों को ढोता ही रहा।

उम्र भर कोई चलाता ही रहा तीरे सितम,[1]
आँसुओ से कोई अपने दाग़ धोता ही रहा।

मिल गई कछुए को मंज़िल सुस्त रफ़्तारी के साथ,
सो गया खरगोश रास्ते में तो सोता ही रहा।

हाँ वही 'अंदाज़' ठहरा है मसीहा-ए जहाँ,[3]
उम्र भर सीने में जो नश्तर चुभोता ही रहा।

---

1. अत्याचार का बाण
2. धीमी चाल
3. संसार का जीवनदाता

सोलह

जो यादों का तेरी सहारा न होता।
जहाँ में हमारा गुज़ारा न होता।

न मिलना मेरे दिल को जख्मों का तोहफा,
जो तेरी नज़र का इशारा न होता।

बिखर जाता शीराज़ा-ए-जिन्दगानी,[1]
अगर मुझको तूने संवारा न होता।

हरारत तमन्ना को मिलती कहाँ से,
तेरे हुस्न का गर शरारा[2] न होता।

तेरा हुस्न जानम मेरे साथ होता,
मुहब्बत की बाज़ी जो हारा न होता,

ज़माना गले से लगाता मुझे भी,
अगर मैं मुक़द्दर का मारा न होता।

हुई पाक-उल्फ़त[3] भीं 'अंदाज' रुसवा,[4]
मुझे काश ! तुमने पुकारा न होता।

---

1. जीवन की माला
2. शोला
3. पवित्र प्यार
4. बदनाम

सत्रह

समझते हैं जो खुद को, खूब क़ाबिल।
ठहरते हैं वही इन्सान गाफ़िल।

बहुत मासूम लगता है जो तुझको,
वही सूरत न हो दिल, तेरी क़ातिल।

गज़रता जा, यों ही तूफ़ाँ के मुँह से,
मुसाफ़िर तुझको मिल जाएगी मंज़िल।

खदा का नाम ले, डर मत भँवर से,
अगर कश्ती को, दिलवाना है साहिल।[1]

खुलीं आँखें तो निकलीं फ़ासले पर,[2]
बड़ी नज़दीक लगती थी जो मंज़िल।

मेरे चेहरे पे, कर तन्क़ीद,[3] लेकिन,
कभी आइना, तू भी रख मुक़ाबिल।

कटी जद्दो-जेहद[4] में उम्र लेकिन,
हुआ 'अंदाज' आख़िर पा-ब-मंजिल[5]।

---

1. किनारा
2. दूरी पर
3. आलोचना
4. संघर्ष
5. मंजिल पर पैर (मंजिल पर पहुँचा हुआ)

अट्ठारह

तेरी याद आती है, आती रहेगी।
चराग़े-मुहब्बत, जलाती रहेगी।

ये तस्वीर दीवार पे जो टँगी है
मदा मेरे दिल को रुलाती रहेगी।

मेरा प्यार, मुझसे खफ़ा हो गया है,
जुदाई मुझे आज़माती रहेगी।

वफा हो, जफ़ा हो, करम, हो, सितम हो,
तेरी हर अदा मुझको भाती रहेगी।

मेरे बाद, मेरी ग़ज़ल के सहारे,
मेरी याद दुनिया को आती रहेगी।

किरन आपके माहताबी बदन की,
अँधेरों की दुनिया मिटाती रहेगी।

वो ख़्वाबों की 'अंदाज़' दुनिया है मेरी,
सदा मुझको जन्नत दिखाती रहेगी।

उन्नीस

क़हर[1] बरसाती हुई ग़म की घटा[2] आज भी है।
ज़िन्दगी देख ! तेरे सर पे बला आज भी है।

आपके तीर निशाने पे लगे थे मारे
देखिये दिल मेरा ज़ख़्मों से भरा आज भी है।

कैसे कह दूँ कि तेरी याद से बेगाना[3] हूँ,
मेरी आँखों में तेरा ख़्वाब बसा आज भी है।

ना-ख़ुदा[4] मेरे तुझे इसकी ख़बर है कि नहीं,
दिल मेरा दर्द के तूफ़ां में घिरा आज भी है।

यार बिछड़े हुए तुझसे, मुझे मुद्दत गुज़री,
तेरा हर नक़्श[5] मगर दिल में बसा आज भी है।

हो गये ग़ैर के सब चाहने वाले तेरे,
लेकिन 'अंदाज़' तेरा सिर्फ़ तेरा आज भी है।

---

1. प्रलय
2. दु:ख के बादल
3. ग़ैर पराया
5. ख़ाका (निशान)
4. नाविक (कर्णधार)

बीस
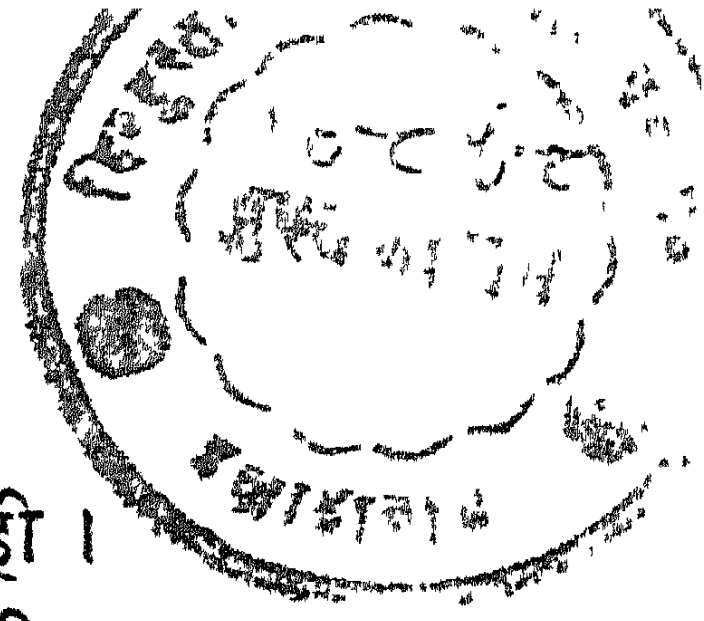
दुनिया में आज प्यार की दौलत नहीं रही।
दिल में किसी को पाने की हसरत[1] नहीं रही।

कैसे करें यक़ीन वफ़ा में किसी का हम,
चाहत में पहली जैसी सदाक़त[2] नहीं रही।

जीते थे जिसके वास्ते, मरते थे जिसपे हम,
दुनिया में अब वो हुस्न[3] की सूरत नहीं रही।

इस दर्जा तेज़-गाम[4] है अब ज़िन्दगी यहाँ,
आपस में बात करने की फ़ुरसत नहीं रही।

राहे-वफ़ा में अब न रहे पहले से रफ़ीक़,[5]
अब ज़िन्दगी में कोई हरारत नहीं रही।

क्या लुत्फ़ ज़िन्दगी का मिलेगा किसी को अब,
'अदाज़' जब दिलों में मुहब्बत नहीं रही।

---

1. तमन्ना
2 सच्चाई
3. सौंदर्य
4. द्रुतगामी
5. दोस्त

इक्कीस

नक़्श दिल का मिटाया गया।
उनको कैसे भुलाया गया।

क़िस्सा-ए-दिल[1] सुनाया गया,
अश्क आँखों में लाया गया।

भूलना जब भी चाहा उन्हें,
मुँह तुम्हारा दिखाया गया।

प्यास बुझनी नही थी अगर,
मयकदा[2] क्यों सजाया गया।

लुत्फ़ तुमको मिला हो न हो,
ख़ून दिल का बहाया गया।

क्यों सरे-बज़्म[3] "अंदाज़" पर,
क़हर[4] नज़रों का ढाया गया।

---

1. दिल का फिस्सा
2 मधुशाला
3. महफ़िल में
4. प्रलय

बाइस

जाम फ़ुरक़त[1] का पिया करता हूँ।
याद हर वक़्त किया करता हूँ।

दीद[2] क़िस्मत में नहीं, फिर भी,
नाम क्यों उसका लिया करता हूँ।

लुत्फ़[3] जीने में नहीं अब, लेकिन,
देखकर तुझको, जिया करता हूँ।

लोग नफ़रत से मुझे तकते हैं,
जब कि मैं प्यार किया करता हूँ।

दोस्त हो कोई कि दुश्मन 'अंदाज़',
साथ मैं सबका दिया करता हूँ।

---

1. जुदाई
2. दर्शन
3. आनन्द

तेइस

कितना बे-सूद[1] ज़रो-माल[2] पे इतराना है।
एक दिन सबको तिही-दस्त[3] गुज़र जाना है।

ज़िन्दा रखवाएगा तुझको न तेरा जाहो-हशम,[4]
तेरा अख़लाक़[5] ही हर शख़्स को याद आना है।

दोस्त हो कोई कि दुश्मन न बटायेगा ये ग़म,
आतिशे-हिज्र[6] में तन्हा ही जले जाना है।

आज जो भी करो कल के लिए सोचे रक्खो,
क्यों कि फल अपने किये का ही तुम्हें पाना है!

कोई मफ़हूम है[7] जीने का तो 'अंदाज' यही,
ग़म के तूफान से हँस-हँस के गुज़र जाना है।

---

1. व्यर्थ/निरर्थक
2. धन दौलत
3. खाली हाथ
4. मान-मर्यादा
5. व्यवहार
6. वियोगाग्नि
7. आशय

चौबीस

हर घड़ी लब पे वफा का नाम है।
अहले-दिल[1] का दूसरा क्या काम है।

दीद उसकी ही मुक़द्दर में नहीं,
नाम जिसका लब पे सुब्हो-शाम है।

इस कदर ग़म-गीं[2] है क्यूँ दिल की फ़िज़ा,
रक़्स[3] में जब ज़िन्दगी की जाम है।

तुझको कैसे भूल जाऊँ बे-वफ़ा,
आँख में कूचा[4] तेरा ही बाम[5] है।

मयकदे[6] की क़द्र क्या अंदाज हो
हर गली कूचे में दौरे-आम[7] है।

---

1. दिल वाले
2. दु:ख से भरा हुआ
3. नृत्य
4. गली
5 छत
6. मधुशाला
7. शराब का दौर (चलना)

पच्चीस

लब पे हँसी है या कि क़यामत[1] का शोर है।
क़िस्मत के आगे चलता यहाँ किसका ज़ोर है।

इस तरह हमको छोड़ के तन्हा[2] न जाइए,
हाथों में आपके मेरे, जीवन की डोर है।

उनकी निगाह उट्ठी कि दिल हाथ से गया,
उनकी निगाह है कि मेरे दिल का चोर है!

आते ही उनके नाच उठा खुद को भूलकर,
मौसम वही है और वही मन का मोर है।

'अदाज' के लिए जो उठा करती थी सदा,
अब वो निगाह किसलिए ग़ैरों की ओर है।

---

1. प्रलय
2. अकेला

छब्बीस

सच कहती है दुनिया कि गुनहगार वही है।
दीवाना वही आपका, बीमार वही है।

ऐ काश ! ये कहने की जसारत[1] करे कोई,
जो देश पे मरता नहीं ग़द्दार वही है।

वैसे तो हज़ारों ही को है प्यार का दावा,
जो वक़्ते-मदद[2] आये, मददगार वही है।

क्या हमने बदल डाले है सच-झूट के मानी,
अब झूट का साथी है, जो सरदार वही है।

इस दौर में दौलत से नही जिसका तअल्लुक़[3]
कहते है जहाँ वाले कि, बेकार वही है।

कमज़ोर हवाओं से तो लड़ जाते हैं सब ही,
टकराये जो चट्टान से दमदार वही है।

हूँ दूर बहुत जिसकी हवाओं से भी "अंदाज़',
नज़रों में मेरे आज भी गुलजार[4] वही है।

---

1. हिम्मत
2. समय पे मदद
3. सम्बन्ध
4. रौशन (हरा-भरा)

सत्ताइस

हसींतर[1] दर्द से ऐ दिल ! बता, इनाम क्या होता।
सितम होता न गर तुझ पर, वफ़ा का नाम क्या होता।

बुरा कहिए न सूरज को अगर आतश[2] भी बरसाए,
न लगती धूप तो ये माया-ए-आराम क्या होता।

अगर दर्दो-अलम[3] रजो-मेहन[4] होते न दुनिया में,
किसी को क्या मजा आता, खुशी का काम क्या होता।

हम ऐसे रिन्द ऐ साक़ी ! न होते मय के दीवाने,
तो तेरे हाथ में रक़्सां तेरा ये जाम क्या होता।

अंधेरे की बदौलत ही है रुतबा मेहरे-ताबाँ[5] का,
चमकती रात भी दिन सी तो उसका काम क्या होता।

---

1. अधिक आकर्षक
2. आग
3. दु.ख और पींड़ा
4. दु:ख
5. चमकता हुआ सूर्य

अट्ठाइस

मुहब्बत की राहों पे चलते रहें।
बला से हवसक़ार[1] जलते रहें।

न आये बला मयकदा पर कभी,
सदा दौर सहबा के चलते रहें।

मिले हर क़दम कामयाबी तुझे,
रक़ीबों[2] के दिल यों ही जलते रहें।

न मायल[3] कभी हों बुराई पे हम,
सदा नेक राहों पे चलते रहें।

ख़ुदा हमको वो हौसला कर अ़ता,
लगें ठोकरें तो संभलते रहें।

रहें दोस्त होकर किसी एक के,
कहाँ रोज़ साथी बदलते रहें।

तुझे पाके 'अंदाज़' हैं, दोस्त ख़ुश,
जो हासिद[5] है वो हाथ मलते रहें।

---

1. हवस करने वाले
2. प्रतिद्वन्दी
3. प्रवृत्ति
4. प्रदान
5. ईर्ष्यालु

उन्तीस

शाख़ से बर्ग[1] टूट जाएगा।
साथ बरसों का छूट जाएगा।

तीरगी[2] रूप देगी शबनम को,
सुब्ह का नर लूट जाएगा।

वक़्त ही दोस्त भी है, दुश्मन भी,
क्या ख़बर किससे रूठ जाएगा।

जीती बाज़ी भी हार जाएँगे,
जब कोई हमसे रूठ जाएगा।

तेरा 'अंदाज़' और कुछ तो नहीं,
देके यादें अटूट जाएगा।

---

1. पत्ता
2. अँधेरा
3. प्रकाश

तीस

ज़ख्मे-दिल[1] लोगों की नजरों से बचाएँ कैसे।
राज़ उल्फ़त[2] का छुपाना है, छुपाएँ कैसे।

मसला[3] पेशे-नज़र[4] सब से बड़ा है, तो यही,
आग नफ़रत की भड़कती है, बुझाएँ कैसे।

तू जो आता नहीं महफ़िल में तो, फिर तू ही बता,
अपनी तन्हाई[5] को आइने मिटाएँ कैसे।

है जो दीवार खड़ी बीच दिलों के कहिए,
मिल के हम-आप वो दीवार गिराएँ कैसे।

जिसको देखो नज़र आता है, ग़रज़ का बन्दा,
अपने रिश्तों को बिखरने से बचाएँ कैसे।

जब लपक उट्ठे थे भीगे हुए तन से शोले,
हाय ! बरसात की वो रात भुलाएँ कैसे।

दौरे-मय[6] रात ढले तक तो चले ऐ साक़ी।
प्यास बरसों की है, लम्हों[7] में बुझाएँ कैसे।

कोई ":अंदाज़" हमें काश ये समझा जाये,
रूठ बैठे हैं जो, हम उनको मनाएँ कैसे।

---

1. दिल का जख्म
2. प्यार
3. समस्या
4. नज़र के सामने
5. एकाकीपन
6. शराब का दौर चलना
7, क्षण, पल

इकतीस

जुदा सबसे होने को जी चाहता है।
अकेले में रोने को जी चाहता है।

जहाँ मुस्कुराते हुये हम मिले थे,
वहीं आज रोने को जी चाहता है।

शराबे-मुहब्बत[1] भी क्या है कि सबको,
उसी में डुबोने को जी चाहता है।

वो क्या ख़्वाब में आ गये थे कि तबसे,
हमेशा ही सोने को जी चाहता है।

बहुत छल चुके ख़्वाब 'अंदाज़' अब तो,
हक़ीक़त में खोने को जी चाहता है।

---

1. प्रेम-मदिरा

बत्तीस

कितने परदों में बात होती है।
उनसे ख़्वाबों में बात होती है।

जगमगाती है, बज़्मे-तन्हाई,[1]
जब ख़यालों में बात होती है।

कोई पहलू[2] में गर नहीं तो क्या,
आँखों-आँखों में बात होती है।

चश्मे-साक़ी[3] पे जान दे देंगे,
मयगुसारों[4] में बात होती है।

उनके हुस्नो-जमाल[5] की 'अंदाज़'
चाँद-तारों में बात होती है।

---

1. अकेलेपन की सभा (महफ़िल)
2. गोद
3. साकी (शराब पिलाने वाला) साकी की आंख
4 शराबी
5. सौंदर्य

तैंतीस

क्यों लगे हो मुझे मिटाने में,
और भी खेल हैं ज़माने में।

कोई मिलता नहीं हक़ीक़त[1] से,
लुत्फ़[2] लेते हैं सब फ़साने में।

काम आती हैं अपनी तद्बीरें,[3]
कौन किसका है इस ज़माने में,

क्या किसी को उठाएगा वो शख़्स,
लुत्फ़ लेता है जो गिराने में।

हौसला हो तो छीन लो बढ़कर,
हक़ के तालिब[4] हो गर ज़माने में।

कौन बदले निज़ामे-बरहम[5] को,
मस्त हैं सब शराबख़ाने में।

ज़ुल्म के हाथ काट दो 'अंदाज'
गर उठे वो तुम्हें मिटाने में।

---

1. सच्चाई
2. आनन्द (मजा)
3. युक्ति (तरक़ीब)
4. इच्छुक (मांगने वाला)
5. ख़राब व्यवस्था (तितर-बितर)

चौंतीस

है ज़रूरत कि अँधेरों को मिटाएँ मिलकर।
आओ! हम प्रेम की कन्दील[1] जलाएँ मिलकर।

इसके रहते हुए हम एक नहीं हो सकते,
आइये भेद की दीवार गिराएँ मिलकर।

रास्ता जिनको तअस्सुब[2] का भला लगता है,
जादा-ए-इश्क़[3] पे उन लोगों को लाएँ मिलकर।

प्रेम से मिलके रहें, अपने वतन में हम लोग,
शहरे-हस्ती को, चमनजार[4] बनाएँ मिलकर।

हम कि इन्सान है, शोभा हमें देगा तो यही,
मिलके आपस में रहें, रहके दिखाएँ मिलकर।

अब हमें स्वर्ग वनाना है वतन को 'अंदाज़',
आइये इसके लिए ज़ोर लगाएँ मिलकर।

---

1. दीपक
2. भेद-भाव
3. प्रेम-मार्ग
4. गुलशन (बाग़)

पैंतीस

दुश्वार भी है राह-ए-वफ़ा पुरखतर[1] भी है।
लेकिन इसी पे रक़्स-ए-जुनून-ए-सफ़र भी है ।

जलवा तुम्हारा पाने को आँखे हैं बे-करार,
दर पे तुम्हारे झुकने को बेताब सर भी है।

क्या इसपे एतमाद[2] करे कोई अहले-दिल
लम्बी भी है हयात बहुत मुख़्तसर[3] भी है।

सब कुछ है अपने गाँव में पर दोस्त ये बता,
बढ़ती थीं जिसपे पेंगे वहाँ वो शजर भी है।

तीरा-शबी से इतना परीशान क्यों है तू,
'अंदाज' शब के बाद तूलू-ए-सहर[6] भी है।

---

1. खतरों से भरी हुई
2. भरोसा
3. संक्षिप्त
4. पेड़
5. अंधेरी रात
6. सवेरे का उदय

छत्तीस

जिस तरफ़ देखो कोई क़ितना[1] कोई तूफान है।
ज़िन्दगी तू ही बता जीना कहाँ आसान है।

आपके ख़्वाबों को सींचा जिसने अपने ख़ून से,
आपकी चश्मे-करम[2] से आज तक अन्जान है।

इस जहाँ में साथ अहले-ज़र[3] का देते हैं सभी,
कोई अपना है ग़रीबों का तो बस भगवान है।

किस तरह फ़रियाद पहुँचाएँ किसी सुल्तान तक,
हर महल की पासबानी[4] में कोई दरवान है।

सबसे प्यारा है अगर कोई तो है अपना वतन,
जिसपे हर अह्ले-वतन[5] देशवासी जी जान से क़ुर्बान है।

जख़्म खाकर लहलहाता है किसी गुलज़ार[6] सा,
आपका कितना दिले-'अंदाज' पर एहसान है।

---

1. झगडालू (इन्सान का हरामीपन करना कहलाता है)
2. दया की निगाह
3. पैसे वाले (अमीर)
4. रखवाली
5. देशवासी
6. पुष्प-वाटिका

सैंतीस

जलवा उसे इक बार दिखा क्यों नहीं देते।
बीमारे-मुहब्बत को[1] दवा क्यों नहीं देते।

परदे को हसीं रुख़ से उठा क्यों नहीं देते,
तुम शम्अ अँधेरे में जला क्यों नहीं देते।

क़ायल हैं मुहब्बत के अगर वाक़ई हम लोग,
तफ़रीक़[2] की दीवार गिरा क्यों नहीं देते।

हँसने नहीं देतीं तुम्हें जिस शख्स की यादें,
उस शख़्स की यादों को भुला क्यों नहीं देते।

'अंदाज़' को मुद्दत से रुलाते ही रहे हो,
ख़ुश होके कभी उसको हँसा क्यों नहीं देते।

---

1. प्यार के रोगी को
2. नफ़रत [भेद]

अड़तीस

अपनी नज़रों से गिरा मत देना।
ख़ाक में मुझको मिला मत देना।

ख़ूने-दिल से तुम्हें लिखता हूँ ख़त,
पढ़के तुम अश्क बहा मत देना।

डर के दुनिया के सितम से इक-दिन,
इश्क का दीप बुझा मत देना।

हो मुबारक तुम्हें परदेश, मगर,
अपने लोगों को भुला मत देना।

ज़िन्दगी बोझ हुई अब मुझको,
और जीने की दुआ मत देना।

आके लग जाना मेरे सीने से,
ख़्वाब बरसों के मिटा मत देना।

जीत सकता हूँ तुम्हें दुनिया से,
बस जरा तुम ही दग़ा मत देना।

अपने चेहरे पे उदासी लाकर,
मुझको रोने की सज़ा मत देना।

अपनी मदहोश अदा से 'अंदाज़'
आग जज़्बों में लगा मत देना।

उन्तालीस

समय के साथ कदम से क़दम मिलाता चल।
जहाँ को एक नया रास्ता दिखाता चल।

दिलों को खोखला करती है फ़िक्र दुनिया की,
हवा में फ़िक्र को दुनिया की तू, उड़ाता चल।

ज़ुबाँ पे बात न आये कभी अदावत[1] की,
पयाम[2] प्यार का, दुनिया को तू सुनाता चल।

जो तुमको चाह है कुन्दन[3] का रूप पाने की,
ग़मों की आग में ख़ुद को यों ही तपाता चल।

बुराई रास न 'अंदाज़' आएगी हरगिज़,
भली हों बाते जो दिल में उन्हें बसाता चल।

---

1. दुश्मनी
2. संदेश
3. सोना

चालीस

काश हो जाये इशारा आपके इक़रार[1] का।
ज़िन्दगी के साज से फूटे तराना प्यार का।

क्यों उगाये हैं शजर[2] काँटों के तुमने हर तरफ़,
देखना :तुमको नज़ारा है अगर गुलज़ार का।

मीर-जाफर बन कि तू जयचन्द लेकिन सोच-ले,
नाम इज़्ज़त से लिया जाता है किस गद्दार का।

ऐ तरक्की ! हम ग़रीबों के फिरेंगे दिन तो कब,
बन्द हो पाएगा कब तक सिलसिला बेगार का।

इस किनारे कितने घर, डूबे हुए हैं गिन तो लो,
फिर नज़ारा शौक से तुम-देखना उस पार का।

आओ वीराने को अपने खून से गुलशन[3] करें,
मर पे क्यों एहसान लें 'अंदाज' हम अग़ियार[4] का।

---

1. स्वीकृत
2. पेड़
3. बाग
4. बेगाने

इकतालिस

सुर्ख़रू[1] होके ज़माने को दिखा देते है।
इश्क़ की राहों में जो सर को कटा देते हैं।

उम्र भर यों भी तड़पने की सज़ा देते हैं,
सूनी आँखों में कोई ख़ाब बसा देते हैं।

कैसी मिट्टी के बने होते हैं वो लोग कि जो,
दोस्ती बरसों की पल भर में मिटा देते हैं।

हिरसे-ज़र[2] तेरा बुरा हो कि ज़माने वाले,
कितने मासूमों को बे-वज्ह जला देते हैं।

दिल तो कुछ भी नही हम अह्ले-मुहब्बत[3] 'अंदाज़'
अपनी हस्ती भी मुहब्बत में मिटा देते हैं।

---

1. सफल
2. धन का लोभ
3. मुहब्बत वाले

बयालीस

पास है लेकिन असीरे-तीरगी[1] है ज़िन्दगी,
दूर मुझसे क्या हुए तुम बुझ गई है ज़िन्दगी।

ग़म के अँधियारों से घबराऊँगा क्या, मेरे लिए,
हौसला इक दीप सा है, रोशनी है, जिन्दगी।

कितनी राहत बख़्श है पाबन्द-ए-राह-ए-वफ़ा[2],
दर हकीकत अब हमारी जिन्दगी है ज़िन्दगी।

पेश कितनी ही दलीलें कीं, ख़िरद[3] ने, होश ने,
दिल मगर कहता रहा दीवानगी है ज़िन्दगी।

कोई सो सकता है कैसे नीद सुख की या ख़ुदा!
हर बशर[4] की जब मसायल[5] में घिरी है ज़िन्दगी।

ज़िन्दगी भर मुँकिरों[6] की सफ़[7] में जो "अंदाज़" था,
आख़िरश[8] उसने भी जाना बन्दगी है ज़िन्दगी।

---

1. अंधेरा का बदी
2. वफ़ा की राह की पाबन्दी
3. बुद्धि
4. मनुष्य
5. समस्या
6. नास्तिक
7. कतार
8. अन्तत:

तैंतालीस

राहेहस्ती[1] में साथ छोड़ गया।
ग़म से रिश्ता हमारा जोड़ गया।

क्यों न दिल उसका होके रह जाए,
टूटे रिश्ते को, कोई जोड़ गया।

इसका एहसास भी नहीं उसको,
दिल का आईना भी वो तोड़ गया।

फ़ख्र था जिसकी हमरही-पे मुझे,
दो क़दम चलके, साथ छोड़ गया।

उसका एहसान-मंद हूँ 'अंदाज़',
अपनी यादों से मुझको जोड़ गया।

---

1. जीवन की राह

चौवालीस

सब कुछ है पास जोशे-मुलाकात[1] अब नहीं।
लगता है जैसे पहले से दिन-रात अब नहीं।

क्या दिन थे जब विसाल[2] था मामूले-ज़िंदगी,[3]
ख़्वाबों में भी किसी से मुलाकात अब नहीं।

अरमान ख़ाक होते हैं लुटती है आरज़ू,
हम लोग जैसे वाक़िफ़े-जज़्बात[4] अब नहीं।

मुद्दत हुई पिये हुये आँखों के जाम से,
क़िस्मत में क्या निगाह की सौगात[5] अब नहीं।

'अंदाज़' दिल की बात सुनाते थे जिनको आप,
क्या बात है वो अहले-वफ़ा[6] साथ अब नहीं।

---

1. मुलाकात में जोश (उमंग)
2. मिलन
3. जीवन-चर्या
4. भावनाओं से परिचित
5. भेंट
6. प्यार वाले

पैंतालीस

दूर ही से न निगाहों का समन्दर देखो।
इसकी तह में भी कभी काश उतरकर देखो।

रास्ते तुमको भी मंज़िल का पता दे जाएँ,
तुम भी हिम्मत से कभी रस्तों पे आकर देखो।

अपने दीदार[1] से महरूम[2] वही रखते हैं,
बाम पर आते हुए जिनको बराबर देखो।

पुरख़तर[3] मोड़ तो आ जाने दो तुम रस्ते का,
साफ़ पहचान में आ-जाएगा रहबर देखो।

होश कुछ अपना रहे या न रहे ऐ 'अंदाज़'
जलवा महबूब का आँखों में बराबर देखो।

---

1. दर्शन
2: वंचित
3. ख़तरों से पूर्ण

छियालीस

आँख से आँख मिलाता क्या है।
जीस्त[1] को रोग लगाता क्या है।

जिसका छिपना कभी मुमकिन ही नहीं,
राज़[2] उल्फ़त का छिपाता क्या है।

संगदिल[3] लोग ही बसते हैं यहाँ,
हाले-दिल[4] इनको सुनाता क्या है।

सभी बन्दे हैं ग़रज़ के इस जा[5]
दोस्ती कोई निभाता क्या है।

देखता रहता हूँ पल-पल 'अंदाज',
वक़्त दुनिया को दिखाता क्या है।

---

1. जीवन
2. भेद
3. पत्थर-दिल
4. दिल का हाल
5. जगह

सैंतालिस

क़रीब होके भी लगता है दूर देखो तो।
रहे-जुनूँ[1] में है किसका शऊर देखो तो।

जमाल[2] रखता है कैसा गुरूर देखो तो,
उठा के सर कभी उनको हुज़ूर देखा तो।

ग़मों का बोझ उठाए हुये भी हंसता है।
रहे-हयात[3] में उसका शऊर देखो तो।

ख़ुदा के रह्‌मो-करम से अदब[4] का इक पौधा,
नज़र अब आने लगा है खजूर देखो तो।

जरूर क़ैद भी करवाओ, हुक्मे-क़त्ल भी दो,
मगर है किसका कहाँ क्या क़ुसूर देखो तो

ज़रूर उसपे नजर हो गई इनायत की,[5]
उसी के चेहरे पे कैसा सुरूर[6] देखो तो।

उसी के दम से मेरी शायरी जवान हुई,
उसी के दम से है मेरा शऊर देखो तो,

निगाहे-क़द्र का 'अंदाज' मुस्तहक[7] ही नहीं,
निगाह वालो तुम अपना फ़ितूर देखो तो

1. दीवानगी की राह
2. सौंदर्य
3. जीवन-पथ
4: साहित्य
5. कृपा
6. नशअ
7. अधिकार

अड़तालीस

सुनहरे ख़्वाब[1] पलकों पे सजाकर शाद होते क्या।
वफा से तुम न थे वाक़िफ़ तो हम आबाद[2] होते क्या।

न उड़ते साथ गर मिलकर कबूतर जाल को लेकर,
मुसीबत ही में रह जाते कभी आज़ाद होते क्या।

रहे जो प्यार के प्यासे, रहे जो न्याय के भूखे,
उन्हें मिलती अगर दौलत तो वो जल्लाद होते क्या।

अगर हम डर के बारिश-धूप से मेहनत नहीं करते,
हमारे जिस्म सोचो दोस्तो ! फ़ौलाद होते क्या।

मुरादें[3] इस जहाँ में सबकी जब पूरी नहीं होतीं,
सभी 'अंदाज़' इस दुनिया में सोचो शाद होते क्या।

1: स्वप्न

2. बसना

3. इच्छायें

उन्चास

निगाह मौजों[1] पे रक्खी बहाव देखा है।
नदी में रहके, नदी का स्वभाव देखा है।

ज़रूर दिल में किसी के है कोई फांस गड़ी,
किसी के चेहरे पे हमने तनाव देखा है।

ज़रा सी बात पे पड़ती दरार दिल में कभी
कभी दिलों में पनपता लगाव देखा है।

जहाँ पे पहले बरसता था, अम्न[2] का बादल
वहीं पे आज भड़कता अलाव देखा है।

नई उम्मीदें बदलती है करवटें दिल में,
वफ़ा की सिम्त[3] किसी का झुकाव देखा है।

ज़रूर उसको रुलाएगी मेरी बदहाली,[4]
अगर किसी ने मेरा रख-रखाव देखा है।

भुलाएँ माज़ी[5] के लम्हों को किस तरह 'अंदाज़',
जिधर भी देखा उन्हीं का जमाव देखा है।

---

1. लहरें
2. शान्ति
3. ओर
4. बुरा-हाल
5. भूतकाल (अतीत)

पचास

देखते ही देखते मौसम ये कैसा हो गया।
वादी-ए-गुल का नजारा तीरगी[1] में खो गया।

कोई रौनक़ है निगाहों में न चेहरे पर चमक,
आदमी अब जिन्दगी से दूर कितना हो गया।

फूटती हैं दिल के आँगन में गमों की कोपलें,
बीज यादों का तेरा दीदार[2] कैसा बो गया।

मयकदे का रुख़ न कीजे शेख़ साहब देखिये,
आ सका वापस न कोई उसके दर तक जो गया।

शोर के सैलाब[3] में हुस्ने-समाअत[4] बह गया,
ये ग़लत इल्ज़ाम हैं नग़मों का जादू खो गया।

हौसलों की जौ नजर आती नहीं क्यों राह में,
क्या हमारा कारवाँ गर्दे-सफर में खो गया।

खिलखिलाता है चमनज़ारे-मुहब्बत[6] हर तरफ़,
दाग़ नफरत का कोई 'अंदाज़' जबसे धो गया।

---

1. अँधेरा
2. दर्शन
3. बाढ़
4. सुनने की शक्ति
5- रोशनी
6. मुहब्बत का गुलशन

इक्यावन

आए जो वक़्ते-नज़अ[1] तो लब गुलफ़िशाँ[2] रहे।
हाँ आख़री नफ़स[3] भी तेरी दास्तां रहे।

रंगीन ज़िंदगी हो अगर सबकी दहर्[4] में,
क्यों अपनी जिन्दगी से कोई बदगुमा[5] रहे।

किसमें ये दम है रोक सके मेरी साँस को।
मेरी हयात का जो ख़ुदा पासबाँ[6] रहे।

मैं रह सकूँ बहिश्त[7] में ऐ काश कुछ दिनों,
ऐ काश ! कुछ दिनों वो मेरा मेहमाँ रहे।

उनके लिए जिऊँ मैं उन्हीं के लिए मरूँ,
दिल में मेरे ये नेक इरादा जवाँ रहे।

जी भरके बात करनी है 'अंदाज' उनसे आज,
क्यों आज कोई उनके मेरे दरमियाँ रहे।

---

1. मरने के समय की घड़ी
2. फूल बिखेरना
3. साँस
4- संसार
5. बुरा विचार
6. रक्षक
7. स्वर्ग (जन्नत)
8. बीच

बावन

उम्र भर की दुश्मनी पर ख़ुद ही पछताने लगे।
आँसुओं से वो मेरी मय्यत को नहलाने लगे।

हो गये नाकाम[1] जब मिलने के सारे ही जतन,
हम तेरी तस्वीर से दिल अपना बहलाने लगे।

दिल न था जब तक तुम्हारा क्यों मेरे नजदीक़ थे,
दिल तुम्हारा हो गया तो अब किधर जाने लगे।

किस कदर दिलकश थे वो बचपन के दिन अह्दे शबब[2]
याद आ आकर मुझे अक्सर जो तड़पाने लगे।

भेड़ियों से बचके रहना शह्र में 'अंदाज़' तुम,
गाँव के बूढ़े-सयाने मुझको समझाने लगे।

---

1. असफल
2. जवानी का युग

तिरपन

इक अनोखी फ़िक्र की परवाज है अपनी ग़ज़ल।
शामे-तन्हाई में इक हमराज[1] है अपनी गजल।

ग़ैर की महफ़िल में करती नाज़ है अपनी ग़ज़ल।
साज है, आवाज है, अंदाज़ है अपनी ग़ज़ल।

घुँघरुओं की छम-छमा-छम, रक़्स[2] करते पाँव है,
छेड़ता कोई उसे ज्यों साज़ है अपनी गजल।

हक़ किसी मज़लूम का हरगिज़ न मारा जाएगा,
इक नए संघर्ष का आग़ाज़ है अपनी गजल।

ज़ीस्त[4] में 'अंदाज़' जब-जब घोर अँधियारा हुआ।
ज़ीस्त में तब-तब बनी मुमताज़ है अपनी ग़ज़ल।

---

1. दोस्त
2. नृत्य
3. प्रारम्भ (शुरूआत)
4. जीबन

चौवन

कभी तो उसपे मेरे इश्क़ का असर होगा।
कभी तो फ़ासला-ए-हिज्र[1] मुख़्तसर[2] होगा।

वो जिसकी राह में नफ़रत पनाह पाती है,
उसी की राह से अब इश्क़ का गुजर होगा।

जो तुम भी रूठ गये मेरे दिल की दुनिया से,
मेरा ठिकाना बताओ कहाँ-किधर होगा।

मेरा ये आइना-ए-दिल जो टूट जाएगा,
तो सोच! किसमें तेरा अक्से-ख़ूबतर[3] होगा।

जहाँ भी जाएगा दुनिया में आपका 'अंदाज',
वहीं दयारे-वफ़ा[4] इश्क का नगर होगा।

---

1. जुदाई का अन्तर
2. संक्षिप्त
3. सुन्दर प्रतिबिम्ब
4. प्यार का क्षेत्र (इलाका)

पचपन

कैसे बदलेगी भला मुफ़लिस[1] की जो तक़दीर है।
जो मुहाफ़िज़[2] है वही जब ज़ुल्म की तस्वीर है।

पूछिए तो हर कोई आज़ाद है इस देश में,
सोचिए तो हर किसी के पाँव में ज़ंजीर है।

सर छुपाने को मिलेगी कब हमें भी एक छत,
इस समय तो, आस्माँ ही ख़्वाब की ताबीर[3] है।

बच सकेगा क्या परिन्दा[4] शाख़ पर बैठा हुआ,
घात में उसकी, शिकारी का सधा जब तीर है।

क्या यही छवि है हमारी सभ्यता की सोचिए,
नग्नता इस देश की महिलाओं की तक़दीर है।

भेड़ियों की टोलियाँ आज़ाद फिरती हैं यहाँ,
भोले हिरनौटों[5] की गरदन में पड़ी जंजीर है।

दर्द पाकर मुतमइन[6] रहने की आदत डालिये,
दर्द ही 'अंदाज़' साहब आपकी जागीर है।

1: निर्धन
2. रक्षक
3. स्वप्न फल
4. पक्षी
5. हिरन का बच्चा
6. गम्भीर

छप्पन

नज़र से नज़र अब मिलाते नही है।
हसीं ख़्वाब आँखों में आते नहीं हैं।

हुए फ़ासले दरमियाँ जो हमारे,
उसे दोस्तो! क्यों मिटाते नही हैं।

मेरे दिल की दुनिया बदल देने वाले,
मुझे अपना जलवा दिखाते नहीं हैं।

फ़कीरी की राहों क़दम जब-से रक्खा,
नज़ारे जहाँ के लुभाते नहीं है।

निभाता है वादा कोई एक 'अंदाज़',
सभी अपना वादा निभाते नहीं हैं।

सत्तावन

सूर्य अब पश्चिम की जानिब[1] जाएगा।
रंग धरती पर लहू का छाएगा ।

बिम्ब आँखों में उभर कर छाएगा,
जब कोई पैग़ाम[2] उनका लाएगा ।

सीख लेगा बन्दरों का जो हुनर,
ताजे-मीठे रस भरे फल खाएगा ।

ख़्वाब तेरे टूट जाएंगे सभी,
जब हक़ीक़त के नगर में जाएगा।

काम हिम्मत से सदा 'अंदाज़' ले,
जुल्म वरना और तुझ पर ढाएगा।

---

1. ओर

2, संदेश

अट्ठावन

एक कश्ती पे पाँव हरदम रख।
जान महफ़ूज़[2] अपनी हमदम[3] रख।

हिज्र में तेरे, मर ही जाएंगे,
साथ मुझको भी अपने हमदम रख।

बारे-हस्ती[4] तू ढो सके ऐ दोस्त,
अपने बाज़ू में इतना दम-ख़म[5] रख।

तेरे अश्कों का मोल जानेंगे,
अपनी हस्ती के साथ तू ग़म रख।

चाहते दोस्ती हो गर 'अंदाज़',
बोलना-चालना ज़रा कम रख।

---

1. नाव
2: सुरक्षित
3. मित्र
4. जीवन का बोझ
5. सामर्थ्य

उनसठ

किसको आता है ज़िन्दा नज़र ।
मौत से जो भी जाता है डर ।

रात यों ही न जाए गुज़र,
ऐ मेरे हमनवा[1] हमसफर[2] ।

आइना हूँ मुहब्बत का मै,
देखो देखो न देखो इधर ।

एक बन्जारे हैं इस समय,
इस समय धूप है अपना घर ।

एक शिक्षा ही है पास में,
पास वर्ना न कोई हुनर ।

अज़्म[3] के साथ बढ़ते हैं जो,
उनको आसां है हर इक सफर ।

क्या करें उसका हम ऐतबार,
वादे से जो है जाता मुकर ।

भेंट होली के जो चढ़ गये,
मेरी यादों में हैं वो शजर ।[4]

कोई तो बात है वर्ना क्यों,
मर मिटे आप 'अंदाज़' पर ।

1-2. साथी
3. संकल्प
4 पेड़

साठ

सुर्ख़रु[1] हो सके तो उल्फ़त में।
ख़ूँ के प्यासे थे जो अदावत[2] में।

क्या हुआ, कैसे हो गये पत्थर,
दिल धड़कते थे जो मुहब्बत में।

दूर होते गये हम अपनों से,
खेल खेला गया वो चाहत में।

सुबह के इन्तज़ार में कब तक,
साँस लेते रहोगे ज़ुल्मत[3] में।

दूर रोटी से तुमने रक्खा है,
इसलिए उतरा वो बग़ावत में।

पूछिए तुम निज़ाम[4] से 'अदाज़',
क़त्ल होता है क्यों हिरासत में।

---

1. सफल
2. दुश्मनी
3. अँधेरा
4, व्यवस्था

इकसठ

लाश के ढेर से गड्ढे पटने लगे।
धर्म के नाम पर लोग कटने लगे।

सब दिलों में अ़दावत के जज़्बात हैं,
दायरे प्यार के क्यों सिमटने लगे।

इन्तख़ाबात[1] के वक़्त हर रहनुमा,
भूक-रोटी के पन्ने पलटने लगे!

ऐसे तोते को पिंजरे से बाहर करो,
राम के बदले ख़ुद को जो रटने लगे।

जो मुख़ालिफ़[2] हमारे थे 'अंदाज़' अब
देख थैली वो सिक्कों की पटने लगे।

---

1. चुनाव
2- विरोधी

बासठ

हर तलखी-ए-हयात[1] से अन्जान हैं अभी।
हँसते हैं आँसुओं पे वो नादान हैं अभी।

माना कि हर जगह हैं गुनाहों के देवता,
गौतम के रूप में यहाँ इन्सान हैं अभी।

थोड़ी सी उम्र और मुझे बख़्श ऐ ख़ुदा,
बाक़ी हज़ार-हा मेरे अरमान हैं अभी।

ख़ुशियों के फूल कोई खिलाए भी किस तरह,
राहों में उसकी सैकड़ों तूफ़ान हैं अभी।

आने न पाए चेहरे पे ग़म की कोई झलक,
'अंदाज़' अपने घर में वो मेहमान हैं अभी।

1: जीवन की कड़वाहट

तिरसठ

आज जाना है ये हमने किस कदर मजबूर हैं।
पास है मंज़िल हमारे और कितने दूर हैं।

सामना चट्टान से शायद नहीं उनका हुआ,
आम लोगों में जो कहते फिर रहे हमसूर हैं।

क्या सुनेंगे दिल की बातें वो हमारी दोस्तो!
नश्श-ए-ऐशो-तरब[1] में चूर हैं मग़रुर है।

एक दिन दो-चार होंगे आँसुओं से वो कभी,
देखकर जो, हार उनकी हो रहे मसरुर[2] हैं।

चाहकर भीं मिल नहीं सकते कभी 'अंदाज़' हम,
आज हमसे दूर इतने दूर इतने दूर हैं।

---

1. सुख और मस्ती का नशा
2. खुश, प्रसन्न;

चौंसठ

दीप का ज्योति से रिश्ता[1] है जो तोड़ें कैसे।
हम तेरा दर तेरी दहलीज़ को छोड़ें कैसे।

हम ही नादाँ[2] थे जो ख़ुद आन फंसे पिंजड़े में,
क्यों अबस[3] सोचते हैं तीलियां तोड़ें कैसे।

छल-कपट से बने जो ताज के मालिक यारो!
सामने उनके भला हाथ ये जोड़ें कैसे।

भेड़ियों को ज़रा आज़ाद करो फिर देखो,
कैद हैं ये हमें फिर फाड़ें-भंभोड़ें कैसे।

हर घड़ी मेरी जो ख़िदमत[4] में लगा रहता है,
सोचिए हाथ वो 'अंदाज' मरोड़ें कैसे।

---

1. सम्बन्ध
2. ना-समझ
3. व्यर्थ
4. सेवा

पैंसठ

वो अपने को जहाने-फ़िक्र[1] से आज़ाद कर लेंगे।
नगर ख़्वाबों[2] का इक आंखों में जो आबाद[3] कर लेंगे।

न खाओ ख़ौफ़[4] तूफ़ाँ से भंवर में ले चलो कश्ती,
पड़े जब आन मुश्किल तो ख़ुदा को याद कर लेंगे।

नसीहत[5] जो नहीं लेते नसीहत आप क्यों देते,
ख़ुद अपने हाथ अपनी ज़िन्दगी बरबाद कर लेंगे।

जिन्हें तस्कीन मिलती है हरा जख़्मों को रखने में,
तड़पना जब भी चाहेंगे उन्हें वो याद कर लेंगे।

हमारे देखकर गम को जो मिलती है ख़ुशी उनको,
तबीअत दोस्तो अपनी यों ही नाशाद[6] कर लेंगे।

नजर कोई नहीं जब सामइन[7] 'अंदाज़' आएगा,
करेंगे पेश मतला और ख़ुद इरशाद[8] कर लेंगे।

---

1. चिंता का संसार
2. स्वप्न
3. बसाना
4. डर
5. उपदेश
6. दुःखी
7. श्रोता
8. आदेश

छांछठ

किसी की याद में दिल रहता बेक़रार नहीं।
वफ़ा की राह में अब मेरा इन्तजार नहीं।

वो अपना नाम ख़ुदी आफ़ताब[1] कर लेगे,
तुम्हारी रहमतों का कोई कर्ज़दार नहीं,

ग़मो की आँधियों में भी तू मुस्कुराना सीख़,
ज़रा सी बात पे रोते है जार-ज़ार[2] नहीं।

कि आन रख सको आलिम[3] के बीच तुम अपनी,
तुम्हारा जेह्न[4] अभी इतना पायदार[5] नही।

निगाह फेर न "अंदाज़" दीन-दुनिया से,
"सदाक़तों[6] का-सिला[7] जुज[8] सलीबो-दार[9] नहीं"

---

1. सूरज
2. बिलख-बिलख कर
3. विद्वान
4. मष्तिस्क
5. मज़बूत
6. सच्चाई
7. बदला
8. सिवाय
9. सूली

सरसठ

वो जान के दुश्मन हैं सूली पे चढ़ाएंगे।
हम जान लुटा देंगे, तारीख़[1] बनाएंगे।

इख़्लासो-मुहब्बत[2] के शैदाई[3] कहां हैं अब,
जो तेरे लिए अपना घर-बार लुटाएंगे।

हम अम्न के शैदा हैं हम प्यार ही बांटेंगे,
वो ज़ुल्म के ख़ूगर[4] है वो खून बहाएंगे।

बदे हैं ग़रज़ के जो, जो दास है लालच के,
इन्साफ़ की राहों पे क्या चलके दिखाएंगे।

फुरसत ही नहीं जिनको, ग़म दिल का बंटाने की,
तन्हाई को हम अपना अहवाल[5] सुनाएंगे।

सूरज को उगाने की कोशिश जो नहीं करते,
किरनों पे वो हक़ अपना बढ़-चढ़के दिखाएंगे।

'अंदाज़' कवल जैसे कीचड़ में खिला करते,
इफ़्लास[6] के दल-दल में हम ख़ुद को खिलाएंगे।

---

1. इतिहास
2. प्रेम-मुहब्बत
3. मिटने वाले (प्रेमी)
4. आदी
5. हाल
6. निर्धनता

अड़सठ

धर्म-मज़हब का बोल-वाला है।
ये अंधेरा है या उजाला है।

आदमी, आदमी का दुश्मन हो,
बीज नफ़रत का ऐसा डाला है।

क्या करूँ आँसुओं के दरिया ने,
सब्र का बांध तोड़ डाला है।

किसको अपनाएं इस ज़माने में,
कोई तलवार कोई भाला है।

राम जाने वतन का होगा क्या,
इन दिनों हर तरफ़ घोटाला है।

पड़ मुसीबत में देख फिर 'अंदाज़',
किसका दिल साफ़ किसका काला है।

उनहत्तर

जहाँ सौ बार लुट चुका हूँ मैं।
फिर उसी मोड़ पर खड़ा हूँ मैं।

शाख़ से टूट जाए जाने कब,
ज़र्द[1] पत्ता जो देखता हूँ मैं।

ग़म समन्दर है जिसके साहिल[2] पर,
सीप खुशियों के ढूंडता हूँ मैं।

किस क़दर दूर है निगाहों से,
जिसको दिल में बसा चुका हूँ मैं।

जगमगाता है रास्ता 'अदाज़',
दीप सा जबसे जल रहा हूँ मैं।

---

1. पीला
2. किनारा

सत्तर

रग मौसम का तू बदलते देख।
दिल के अरमान तू मचलते देख।

लौट कर फिर कभी न आएगा,
सोचकर उसको हाथ मलते देख।

तूने देखा है उगते सूरज को,
देख अब जिन्दगी को ढलते देख।

कौन सी शक्ति मिल गई उसको,
सामने शेर के उछलते देख।

हो गए थे जो इतने पत्थर-दिल,
उनको अब प्यार में पिघलते देख।

जीत जाएगे उनसे बाज़ी हम,
सोचकर, मनमें उनको, जलते देख।

जबसे 'अदाज़' सामने आया,
खुशियों के दीप सद्हा[1] जलते देख।

---

1. सैकड़ों

इकहत्तर

कौन कितना क़दम जमाएगा।
एक दिन वक़्त ये बताएगा।

आपका साथ कौन देता है,
कौन रस्ते में छोड़ जाएगा।

दोस्ती का मिला सनद[1] जिसको,
देखना वो छुरी चलाएगा।

क्या बताये उसे कि हम क्या है,
एक दिन ख़ुद ही जान जाएगा।

वक़्त के साथ जो नहीं चलता
कैसे मंजिल को अपनी पाएगा।

जीस्त[2] में तल्खियां[3] भी हैं 'अंदाज़',
इस हक़ीक़त को जान जाएगा।

---

1. प्रमाण-पत्र
2. जीवन
3. कड़ुवाहट

बहत्तर

हमारी जीत में यारो ! कोई नग़्मा[1] सुनाओ तुम।
ज़मीं से आस्मां के बीच इक सीढ़ी लगाओ तुम।

लुटाओ जान तुम अपनी, कहाँ कहते है हम तुमसे,
मगर उम्मीद रखते हैं हमारे काम आओ तुम।

जहाँ पर जिस जगह मजदूर-मालिक में तआवुन[2] है,
वहाँ पर कामयाबी के तराने गुनगनाओ तुम।

तुम्हारे साथ जिसका आचरण अच्छा रहा हरदम,
कम-अज-कम[3] साथ उसके भी भलाई कुछ जताओ तुम।

मैं बन सकता हूँ बैसाखी तुम्हारे पैरों की अंदाज',
मगर चलने की ख़्वाहिश अपने में पहले जगाओ तुम।

---

1. गीत
2. सहयोग
3. कम से कम

तिहत्तर

सोचिए किस काम की आख़िर है कुरबत[1] आपकी।
गर नहीं है जिन्दगी में मेरी शिरकत[2] आपकी,

एक अबला की लुटी इज़्जत सरे-बाज़ार जो,
दे सकेगी क्या उसे सम्मान दौलत आपकी,

शौक़ था जिनको जरा भी शाइरी करने का वो,
शाइरी करने लगे हैं पाके सोहबत[3] आपकी।

आपका दर छोड़कर, जाता भला वो क्या कभी,
थी कहाँ उसके लिए दिल मे रफाक़त[4] आपकी।

जानवर भी प्यार की भाषा समझता जब कि है,
क्यों समझ आई नहीं, उसको मुहब्बत आपकी!

लाडला जो इम्तहाँ में आपका नाकाम[5] है,
कुछ न कुछ 'अंदाज़' जी होगी तो ग़फ़लत[6] आपकी।

---

1. सामीप्य
2. शामिल
3. साथ
4. मित्रता
5. असफल
6 लापरवाह

चौहत्तर

ज़िन्दगी जीना कहाँ आसान है।
हर क़दम पे मौत का सामान है।

इम्तहाने-ग़म[1] से हैं दो-चार जो,
कह रहे हैं शान से, क्या शान है।

भीगने से, बच भी सकता क्या कोई,
तेज बारिश साथ में तूफान है।

कर रहा दश्ते-अदम[2] का वो सफर,
लेके दिल में सैकड़ों अरमान है।

दरम्याँ लाशों के शायद वो मिले,
यार की करता कोई पहचान है!

इल्म[3] है 'अंदाज़' उसको सब मगर,
फिर भी बनता क्यों रहा अंजान है।

---

1. दुःख की परीक्षा
2. परलोक का जंगल
3. ज्ञान

पचहत्तर

ज़ुल्म इन्सानियत पे ढाते हैं।
फ़ाख़्ता अम्न की उड़ाते हैं।
तिफ़्ले-मासूम[1] को रुलाते हैं।
ऊँट की पीठ पर बिठाते है।

रात-दिन दुश्मनी निभाते हैं,
हम जिन्हें आइना दिखाते हैं।

इश्क़ में जान जो लुटाते हैं,
वक़्ते-रुख़सत[2] भी मुस्कुदाते हैं।

प्यार इक आग है तो क्या कीजे;
प्यार में लोग कूद जाते हैं।

रंजो-ग़म से नहीं जो वाबस्ता[3]
गीत ख़ुशियों का गुनगुनाते हैं।

आदमी, आदमी के काम आए,
सीख दुनिया की भूल जाते हैं।

जब भी आते हैं वो ख़यालों में,
इक नया नक़्श छोड़ जाते हैं।

वक्त के साथ जो नही चलते,
पीछे दुनिया के छूट जाते हैं।

ऐ गज़ल तेरी आरज़ू में हम,
दीनो-दुनिया को भूल जाते है।

स्वार्थ के रंग-महल को अपने,
लाश के ढेर से सजाते हैं।

है करिश्मा हमारी मेहनत का,
खेत तेरे जो लहलहाते हैं।

जाके चिन्तन के गर्भ में 'अंदाज़',
इक नया हल निकाल लाते हैं।

---

1. मासूम बच्चा
2. विदाई का समय
3. सम्बन्धित

छिहत्तर

तेरी आवाज पे, आवाज़ लगाते कितने।
जीत का सेहरा तेरे, माथ सजाते कितने।

साथ कितनों का दिया, पहले, जरा ये सोचूँ,
वाद सोचूँ कि मेरा साथ निभाते कितने।

तेरी दौलत से नहीं इश्क़ फ़क़त तुझसे है,
इस हक़ीक़त को मगर, लोग बताते कितने।

यार जितने भी मिले, सब ही मतलवी निकले,
ऐसे में दर्दो-अलम तेरा बंटाते कितने।

एक बेगाने की 'अंदाज' सजी है मय्यत,
देखना अब है उसे काँधा, लगाते कितने।

सतहत्तर

बे-वफाई तेरी हम याद किए जाएँगे।
सूने मयख़ाने को, आबाद किए जाएँगे।

तू सदा मेरी सुने या न सुने ऐ मालिक!
सुन ले तू उनकी ये फरियाद किए जाएँगे।

पेश है एक ग़ज़ल जब भी कहा ये हमने
ये रहा खूब कि इरशाद[1] किये जायेंगे।

उम्र सारी कटे दो वक़्त की रोटी में जब,
सोचिए, अपने को क्या शाद किए जाएँगे।

उनको मिलती है खुशी, गम से मेरे तो 'अदाज़',
ज़िन्दगी को यों ही नाशाद[2] किये जाएँगे।

---

1. आदेश
2. दुःखी
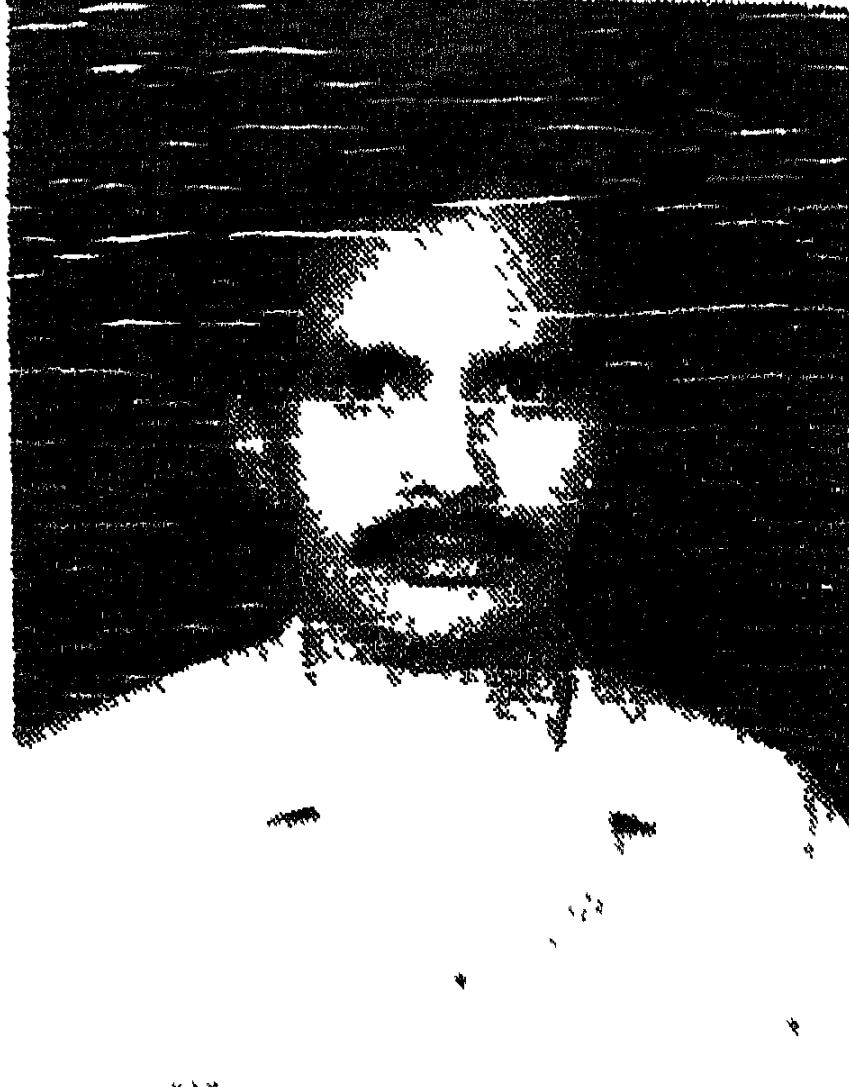
नाम	: अनिल कुमार 'अंदाज़'
पिता	: श्री गया प्रसाद
जन्म-स्थान	: ग्राम गुरैली, कौशाम्बी
जन्म-तिथि	: पंद्रह सितम्बर उन्नीस सौ सत्तावन
कृतित्व	: - विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित ।
	- आकाशवाणी इलाहाबाद से नियमित काव्य पाठ का प्रसारण ।
	- अनेक कवि सम्मेलनों में काव्यपाठ ।
संप्रति	: कार्यालय महालेखाकार, आडिट I में बतौर वरिष्ठ संप्रेक्षक सेवारत ।
संपर्क	: 557/432अ, सुलेम सराय, इलाहाबाद